दिनांक 18.12.2018

प्रेस विज्ञप्ति

सांची विश्वविद्यालय में तंत्र और श्रीविद्या के गूढ़ अर्थों पर गहन मंथन

- **समापन सत्र में मध्य प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल मुख्य अतिथि होंगी**
- **19 दिसंबर को शाम 3 बजे आयोजित है समापन सत्र**
- **हिंदू धर्म के शाक्त तंत्र और यहूदी धर्म के कबालाह पर अध्ययन किया गया प्रस्तुत**
- **भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली में शक्ति और शक्ति पूजा के महत्व पर चर्चा**

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी धर्म-धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन तंत्र शास्त्र की भारतीय और बौद्ध परंपराओं एवं श्रीविद्या के विभिन्न पहलुओं पर गंभीर विचार विमर्श हुआ। आज के पहले सत्र में प्रो. बीवीके शास्त्री ने बौद्ध तंत्र में श्री ललिता के संबंधों पर रोशनी डालते हुए शक्ति के विभिन्न रूपों की तुलना और उनके सामाजिक और दार्शनिक पक्ष को समझाया। उन्होंने कहा कि सामाजिक अर्ध में सरस्वती, लक्ष्मी और काली को अलग-अलग समझा जाता है लेकिन जब शाक्त तंत्र के दर्शन का अध्ययन किया जाता है तो इन तीनों में विभेद नहीं किया जाता। नॉर्थ कैरोलीना, अमेरिका से आई प्रो श्रवण बोरकाटकी वर्मा ने शोध पत्र में शास्त्रीय और आमजनों में चर्चित तंत्रों का तुलनात्मक अधययन प्रस्तुत किया। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि तंत्र शास्त्र को वर्तमान में कैसे अपनाया जाए और इनका डिजीटलीकरण करने से क्या नुकसान हो रहे हैं। कनाडा के सुसकटचेवन विश्वविद्यालय से आए प्रो ब्रज सिन्हा ने हिंदू धर्म और यहूदी धर्म के संदर्भ में शाक्त तंत्र और कबालाह का अध्ययन प्रस्तुत करते हुए बताया कि दोनों ही दर्शनों के नारी शक्ति का खासा महत्व है। मुंबई विवि की प्रो. शुभदा जोशी ने वर्तमान समाज के संदर्भ में शाक्त तंत्र के विकास का अध्ययन प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र में प्रो. रामचंद्र भट्ट ने शिव के विभिन्न रूपों पर चर्चा की। कोरिया से इस सम्मेलन में शामिल होने पहुंचे प्रो. जियो लियॉन्ग ली ने तंत्र परंपरा में शिव और शक्ति के परस्पर संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिव के अर्धनारीश्वर रूप पर काफी विस्तार से अपने शोध को प्रस्तुत किया। एरिज़ोना विश्वविद्यालय के प्रो. केलेब सिमन्स ने तंत्र परंपरा में मंत्रों के भाषाई पहलू पर चर्चा की। उन्होंने मंत्र और उनके अर्थों पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किसी भी मंत्र की शक्ति इस बात पर निर्भर करती है कि वो कैसे उच्चारित किया जा रहा है, उसके अक्षर, ध्वनि, अर्थ और व्युत्पत्ति विज्ञान पर गहन चर्चा की। गुजरात विश्वविद्यालय की प्रो. अमी उपाध्याय ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली में शक्ति और शक्ति पूजा के महत्व पर चर्चा करते हुए बताया कि कत्थक, गरबा और शक्ति पूजा के दार्शनिक पक्ष एक समान हैं। प्रो. दिलीप कुमार मोहंता ने शास्त्र मूलक शक्ति साधना परशोध पत्र प्रस्तुत करते हुए पंचमकार के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि ये कैसे साधक को शक्ति पाने में सहायता करता है।

इस धर्म-धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन के अकादमिक सत्रों के बाद हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शास्त्रीय संगीत की प्रथम प्रस्तुती में डॉ विवेक बंसोड़ ने मंगल वाद्य पर अपनी प्रस्तुती दी। इस शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम में दूसरी प्रस्तुती दी पंडित गनपति भट्ट हसनागी ने। हारमोनियम पर उनका साथ दिया डॉ विवेक बंसोड़ ने और तबले पर संगत दी श्री श्रीधर मंदारे ने। कर्नाटक के पंडित गनपति भट्ट, धारवाड़ के उस्ताद पंडित बसवराज राजगुरू के शागिर्द हैं। पंडित गनपति ने किराना घराना, ग्वालियर घराना और पटियाला घराना से प्रेरित शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत किया।

समापन सत्र में मध्य प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल मुख्य अतिथि होंगी। तीन दिन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैण्ड, बैल्जियम, कोरिया, श्रीलंका एवं नेपाल से 34 विदेशी विद्वान समेत 130 भारतीय विद्वान शाक्त तंत्र के विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं। दूसरे दिन दो सामान्य सत्र, छह गोलमेज सत्र एवं दो अकादमिक सत्र में करीब 60 विद्वानों ने अपने विचार एवं शोधपत्र प्रस्तुत किए। तीसरे और अंतिम दिन दो सामान्य सत्र एवं समापन सत्र होंगे।